

१०५१३३

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

४२०३३ (५९४)

ग्रंथ नाम

व. क. व. क.

विषय

कथा पुराणे.



॥ वामनजन्मबलिअख्यात ॥ इद्राचे पददेवरा ॥
 ॥ जब बलिते विप्रप्रसादेहरी ॥ तेव्हा करुण ॥
 ॥ पमंदिखिअदितिया दिव्यवृत्तेश्रीहरी ॥ जा
 ॥ लावामनमुंजिते चिसमईहोताचभिक्षा
 ॥ वे ॥ सर्वस्वे त्रिपदेहरीस्मरमनात्याचीपदे
 ॥ कोमळे ॥ १ ॥ बळीयागतोनर्मदेचेतटाकी ॥
 ॥ करीअहुतीशुकअग्नीतटाकी ॥ अकस्मा
 ॥ त्रतोदेखवीवामनाला ॥ सुखाचागमेपुष्प
 ॥ ठेवामनाला ॥ २ ॥ पुजीबळीमगह्येबट
 ॥ वामनाते ॥ किमागजेतवअभियगमेम
 ॥ नाते ॥ देणारमीईनरमजकामनाही ॥
 ॥ तुमागजेपुरवितोतवकामनाही ॥ ३ ॥ लुणे
 ॥ धन्यरायाखवंशानुसरि ॥ प्रभूबोळसी
 ॥ हातुज्ञाबोळसार ॥ रणीआणिदानीतु
 ॥ झ्यायाकुळीरे ॥ नदेपाठिकोव्हीचरायाब
 ॥ कीरे ॥ ४ ॥ रायामलायेकअसेअपेक्षा ॥
 ॥ लावेगळीसर्वधनीउपेक्षा ॥ मोजेनिमा
 ॥ श्यात्रिपदेविमते ॥ देणूमिप्रियप्रवरोत
 ॥ माते ॥ ५ ॥ बलिस्त्रणेआतेसाधरवामना
 ॥ बहुतवाटसिगावरवामना ॥ मजअख्या
 ॥ भुवनवृषपावका ॥ बहनमागसिकादिज
 ॥ बाळका ॥ ६ ॥ रावमीधरीनमलाकावरी ॥
 ॥ भ्रातृणाअधिकमुमितावरी ॥ वाटसीब
 ॥ हुचनेटकामना ॥ जेअसेलवदनीकटका
 ॥ मना ॥ ७ ॥ दिजसुतातुळीयावचनामते
 ॥ मजगमेउठतीलरावेमते ॥ निपुणदीस
 ॥ सिनिर्मळआरसा ॥ परिनमार्गअर्थचि
 ॥ फारसा ॥ ८ ॥ हरिह्येईतुकेचिमलापु
 ॥ रे ॥ त्रिभुवनात्मकदेउनियाउरे ॥ त्रिपद
 ॥ मात्रचिकार्यअसेअरे ॥ अधिकईछिति
 ॥ नखनतेबरे ॥ ९ ॥ शब्दश्रावणबलितानआ
 ॥ कळे ॥ शुकसन्निधतयासितेकळे ॥ तोह
 ॥ येभुजसभेउभारुनि ॥ त्याबळीप्रतिच
 ॥ हाकमारुनि ॥ १० ॥ अदितियाउदरीहरि
 ॥ जन्मला ॥ ह्यगुनयेसमईकळलेमला ॥
 ॥ विभवसज्यहरीलसमसरे ॥ यशाहिवि
 ॥ स्ततहोईलअस्तरो ॥ ११ ॥ ह्यगुनदेउसके
 ॥ तुजमीअमा ॥ वैईसमोमपणेअथवाउ
 ॥ गा ॥ ह्यगुनसिदेईनयावरिहीजरि ॥ नीच
 ॥ सिदाटुनिघातकंपजरि ॥ १२ ॥ संकल्प
 ॥ जोमूकरसीलवापा ॥ नदेववेपावसिर

॥ पद्माब्ज पादतल मस्तक सत्य लोकी ॥ कानी
 ॥ दिशम दिन मणी नयन च लोकी ॥ २५ ॥ ये
 ॥ क्यापदे भूमि भरो निधोडी ॥ पाये दु ज्या जं
 ॥ उक गह फोडी ॥ देती सरा पाद लण बकी
 ॥ ला ॥ अयो निपाशी दृढ आ क व की ला ॥
 ॥ २६ ॥ पद युगे भुवन त्रय मो जिले ॥ पद ति
 ॥ जे ब लि च्या शि रियो जिले ॥ पदन खे वि
 ॥ धि आ उ वि दारी ले ॥ पद ज ले भुवन त्रय
 ॥ का रि ले ॥ २७ ॥ त्या का ह्ये प्रार्थु नि या ठ रि
 ॥ ची ॥ करि तु ती त्रे म से र वि र ची ॥ प्र का
 ॥ द आ जा ब वि भु पती च ॥ आ ला मा हा भ
 ॥ क र मा प ती च ॥ २८ ॥ अ ये तु ग हे दि ध ली
 ॥ त्रि लो की ॥ ने ली तु वा पु र्ण ह पा व लो की ॥ कि
 ॥ ला तु वा द उ ह नार्थ जाला ॥ प्र का द इ ल्या
 ॥ दि व दे अ जाला ॥ २९ ॥ प ले ब की ची ज ग दी
 ॥ ख रा ते ॥ वे दु नि बो ले क म का व रा ते ॥ ल ण
 ॥ ध णी तु नि च रा च रा च ॥ व था भि मा नी
 ॥ प्र भु जी न रा च ॥ ३० ॥ सर् व चि प्रा डा ई क
 ॥ बा र्चु ती ले ॥ यो ला उ ति ला च मा हा म ती
 ॥ वे ॥ अ यो ब की दे ती स या प दा ती ॥ की भो
 ॥ गि पा पे य म अ प दा ती ॥ ३१ ॥ कर नि सं क
 ॥ ल्य न दे वि जे व ॥ वा स ल रा य न र का लि
 ॥ ले व ॥ ब की ल ण दे न द व रा या ॥ आ हे च
 ॥ सं क ल्य र व रा के रा या ॥ ३२ ॥ त सान भी मी
 ॥ न र का स दे वा ॥ या पा श ब धा स हि वा स दे
 ॥ वा ॥ न गी सु स च्या ज य वा य ना दा ॥ भि तो
 ॥ अ सा मी अ प की र्ति वा दा ॥ ३३ ॥ कर नि सं क
 ॥ ल्य हि तु ज दे ना ॥ को ष्ठी म ला ध न्य ज गी व
 ॥ दे ना ॥ मा ह्या वि री टे वि ति ज्या प दा ते ॥ जो
 ॥ छे दि तो सर् व हि आ प दा ते ॥ ३४ ॥ करी ब की
 ॥ स्वा त्म नि वे द ना ते ॥ सं तो ष वा टे म धु सु द
 ॥ ना ते ॥ दे ल्ये द्र ती का व चि मु क के ला ॥ प्रे
 ॥ मा म्हा चा ह रि हा भु के ला ॥ ३५ ॥ दे उ नि
 ॥ या सु त ल रा ज्य अ रं व उ द्दारी ॥ रा हो ति से
 ॥ व्य ब लि च्या गृ ह पु त्र द्दारी ॥ जा ला ज सा ह द
 ॥ य मं दि रि वा म ना च्या ॥ व ती चि दा त्म क करी
 ॥ अ व ध्या म ना च्या ॥ ३६ ॥ घ ना क्ष री ॥ करी क
 ॥ मं ड लु द उ दा वि कौ ब तु के उ द उ ॥ ध्या वा ह द
 ॥ इ आ रं व उ भ व ग ज के दारी ॥ सु खी सर् व चे
 ॥ हि स न करी क म लु न य न ॥ सह आ न या ति
 ॥ द्रा य न दा वि श ब्द कु स री ॥ इ द्रा सि दे इ

॥ ज्यापासि सर्वकाळ ॥३॥ (३) आसुराच्या कटकित ॥
 ॥ ७ ॥ बळिहा विसृत्व गुण ॥ यासिकराहानिपु ॥
 ॥ ८ ॥ भाग्य आयत्या चिखुण ॥ कळतारसाप ॥
 ॥ ९ ॥ रंतुत्तागी सर्वपट ॥ देताकाय खटपट ॥
 ॥ १० ॥ तैसे अर्पिता निपट ॥ विश्वहेन सापडे ॥ ऐ ॥
 ॥ ११ ॥ सेदान देजे सत्व ॥ नुरे त्यास हि भिन्नत्व ॥ आ ॥
 ॥ १२ ॥ मनिवेदन तत्व ॥ नेणती हे बापडे ॥ व्यर्थ ॥
 ॥ १३ ॥ चिउ निसून्यास ॥ वेशदा विती ज्ञान्यासा ॥
 ॥ १४ ॥ होला वामनिहान्यास कर्म शडी उपडे ॥ ३ ॥
 ॥ तिबळि आख्या न संपुर्ण ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com